

---

# Shri Nrisimha Ashtakam

श्रीनृसिंहाष्टकम् ६

## Document Information

---

Text title : Shri Nrisimha Ashtakam

File name : nRRisiMhAShTakam6.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, aShTaka, viShNu

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : M K Barman

Description/comments : nRRisiMhakosha 2 upAsanA khaNDa

Latest update : August 4, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 4, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Nrisimha Ashtakam

---

### श्रीनृसिंहाष्टकम् ६

---



(मत्तमयूरीवृत्तम्)

सद्रूपेणाद्यौ विलसन्तं श्रुतिगानम् ।  
पूर्वाब्रह्मानन्दमनादि विगतानम् ।  
पश्चात्तं मायागुणयुक्तं सृजनेऽहम् ।  
वन्दे भक्तामरवृक्षं नरसिंहम् ॥ १ ॥ ध्रु. ॥

प्रेमशा पद्मालालितपादं भगवन्तम् ।  
ब्रह्मेन्द्राद्यैः सिद्धमुनीन्द्रैर्नतदेहम् । वन्दे ॥ २ ॥

विद्युद्गच्छं पङ्कजनेत्रं स्मितलास्यं  
विश्वाधारं पूतयस्त्रिं ध्रुवपास्यम् ।  
मेघश्यामं सर्वगुरुत्मप्रतिवाहं  
वन्दे भक्तामरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ३ ॥

त्रस्तैर्देवैर्दानवभीत्यानुतपादं  
योविर्भूत्वा मोहं कृतवान् सुरवृन्दम् ।  
प्रह्लादार्यं संसदि स्तम्भे धृतदेहं  
वन्दे भक्तामरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ४ ॥

उग्रं रुपं यो धृतवान्वै सुभीष्मं  
भासाल्लुतं सुर्यजतेजः जलु श्रेष्मम् ।  
उर्यक्षास्यं दृर्जनयित्तोधृतमोहं  
वन्दे भक्तामरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ५ ॥

उरौ धृत्वा पाणिजिभिन्नासुरपालं  
निष्कास्थान्त्रान् कन्धरदेशे कृतमालम् ।  
रौद्रदृश्यान्थाशितमांसादि समूहं  
वन्दे भक्तामरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ६ ॥

दूरस्थैर्नमैः सुनृतं सुरपालं  
भक्त्या तुष्टालिङ्गितवान्यो रिपुबालम् ।  
शान्तं कान्तं पालितसधं पददेलुं  
वन्दे भक्ताभरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ७ ॥

मायातीतं सर्वसुपूज्यं कमलेशं  
स्वान्तारामं ध्यानसुगम्यं परमेशम् ।  
भीमातीरे सङ्गमदेशे कृतगेलुं  
वन्दे भक्ताभरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ॢ ॥

दत्तात्रेयं पालय दीनं भवभीतं  
प्रेमशान्धिप्रान्तेऽर्पितवाणिं यतचित्तम् ।  
सौम्यं दत्त्वा ते नय मां त्वं निजदेलुं  
वन्दे भक्ताभरवृक्षं नरसिंहम् । वन्दे ॥ ॣ ॥

एति श्रीनृसिंहाष्टकं सम्पूरुणम् ।

Proofread by M K Barman

---

—  
*Shri Nrisimha Ashtakam*

pdf was typeset on August 4, 2025

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

